NEERAJ®

हिंदी भाषा और सम्प्रेषण

BHDAE-182

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Sanjay Jain, M.A. (Hindi), B.Ed.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.*
4. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
5. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
6. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
7. *The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*
8. *All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.*
9. *All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.*

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

Content

हिंदी भाषा और सम्प्रेषण

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1

Question Paper—December-2022 (Solved) 1

Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1

Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. हिंदी भाषा का विकास 1

2. हिंदी की वर्ण व्यवस्था : स्वर एवं व्यंजन 22

3. स्वर के प्रकार 35

4. व्यंजन के उच्चारण के प्रकार 53

5. वर्णों का उच्चारण स्थान 66

6. हिंदी भाषा की व्याकरणिक इकाइयां 74

7. हिंदी वाक्य रचना 102

8. संप्रेषण के विविध रूप 123

9. संप्रेषण कौशल 138

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

हिंदी भाषा और सम्प्रेषण

B.H.D.A.E.-182

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। अंतिम प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. भाषा के स्परूप को स्पष्ट करते हुए उसकी प्रकृति को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'भाषा का स्वरूप और प्रकृति'

प्रश्न 2. हिंदी वर्णमाला का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-23, 'वर्णमाला', पृष्ठ-32, प्रश्न 2

प्रश्न 3. स्वरों के वर्गीकरण के विभिन्न आधारों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-35, 'स्वरों के वर्गीकरण के आधार'

प्रश्न 4. नासिक्य ध्वनियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-65, प्रश्न 10, पृष्ठ-55, 'नासिक्य ध्वनियां'

प्रश्न 5. 'वर्ण' को स्पष्ट करते हुए व्यंजन वर्णों की विशेषताएं बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-22, 'वर्ण और लिपि', अध्याय-5, पृष्ठ-72, प्रश्न 10

प्रश्न 6. संज्ञा और उसके प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-74, 'संज्ञा और उसके प्रकार'

प्रश्न 7. 'अन्वित' को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-108, प्रश्न 2

प्रश्न 8. आंगिक सम्प्रेषण पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-125, 'आंगिक सम्प्रेषण : अर्थ और स्वरूप'

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) मौखिक भाषा और लिखित भाषा

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-22, 'परिचय'

(ख) व्यंजन से अभिप्राय

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-53, 'व्यंजन से अभिप्राय'

(ग) कर्म कारक

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-78, 'कर्म कारक'

(घ) मिश्र वाक्य

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-105, 'मिश्र वाक्य', पृष्ठ-111, 'मिश्र/मिश्रित वाक्य'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

हिंदी भाषा और सम्प्रेषण **B.H.D.A.E.-182**

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. भाषा के स्वरूप और उसकी प्रकृति का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'भाषा का स्वरूप और प्रकृति'

प्रश्न 2. स्वर एवं व्यंजन वर्णों की चर्चा करते हुए उनके उच्चारण स्थान को भी रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-23, 'वर्णमाला', पृष्ठ-24, 'स्वर एवं व्यंजन के उच्चारण स्थान'

प्रश्न 3. मूल स्वर की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-37, 'मूल स्वर'

प्रश्न 4. वर्ण की परिभाषा देते हुए व्यंजन वर्णों की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-66, 'वर्ण की परिभाषा', पृष्ठ-67, 'व्यंजन वर्णों की विशेषताएं', अध्याय-4, पृष्ठ-56, प्रश्न 1

प्रश्न 5. संज्ञा और उसके प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-74, 'संज्ञा और उसके प्रकार'

प्रश्न 6. सर्वनाम को स्पष्ट करते हुए उसके भेदों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-79, 'सर्वनाम और उसके प्रकार', 'सर्वनाम के भेद'

प्रश्न 7. कर्ता और कर्म के साथ क्रिया के अन्वय का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-104, 'कर्ता और कर्म के साथ क्रिया का अन्वय', पृष्ठ-108, प्रश्न 2

प्रश्न 8. मौखिक सम्प्रेषण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-124, 'मौखिक समप्रेषण : अवधारणा और प्रकार', पृष्ठ-126, प्रश्न 2

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए–

(क) वाचन कौशल

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-140, 'वाचन कौशल'

(ख) मिश्र वाक्य

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-105, 'मिश्र वाक्य'

(ग) वर्ण विचार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-23, 'वर्ण विचार'

(घ) देवनागरी लिपि

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-22, 'देननागरी'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

हिंदी भाषा और सम्प्रेषण

हिंदी भाषा का विकास

1

परिचय

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं और इसके लिए हम वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। भाषा मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है, जिनके द्वारा मन की बात बताई जाती है। किसी भाषा की सभी ध्वनियों के प्रतिनिधि स्वर एक व्यवस्था में मिलकर एक सम्पूर्ण भाषा की अवधारणा बनाते हैं। व्यक्त नाद की वह समष्टि, जिसकी सहायता से किसी एक समाज या देश के लोग अपने मनोगत भाव तथा विचार एक-दूसरे से प्रकट करते हैं; मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह जिनके द्वारा मन की बात बताई जाती है; जैसे–बोली, जबान, वाणी विशेष भाषा कहलाती है।

इस समय सारे संसार में प्रायः हजारों प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं, जो साधारणतः अपने भाषियों को छोड़ और लोगों की समझ में नहीं आतीं। अपने समाज या देश की भाषा तो लोग बचपन से ही अभ्यस्त होने के कारण अच्छी तरह जानते हैं, पर दूसरे देशों या समाजों की भाषा अच्छी तरह सीखे बिना नहीं आती।

वस्तुतः हिंदी भाषा तथा उसके सभी रूपों का विकास 1000 ई. के आस-पास प्रयाग एवं काशी के क्षेत्रों में व्यवहृत होने वाली शौरसेनी तथा मागधी अपभ्रंशों से हुआ माना जाता है। अतः हिंदी भाषा के विकास की कहानी 1000 ई. के आस-पास से शुरू हुई मानी गई है और अध्ययन की सुविधा के लिए इसके 1000 वर्षों के इतिहास को तीन भागों में बाँटा गया है–

1. आदिकाल,
2. मध्यकाल तथा
3. आधुनिक काल।

आदिकाल का समय 1000 ई. से 1500 ई. तक का माना जाता है और इसी अवधि में डिंगल, पिंगल, हिन्दवी आदि हिंदी के रूप विकसित हुए। आदिकाल में हिंदी साहित्य के विकास में जैन, बौद्ध, सिद्ध आदि (धार्मिक) साहित्य तथा रासो साहित्य का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

मध्यकाल का समय 1500 ई. से 1800 ई. तक माना गया है। इस अवधि में हिंदी की प्राकृत बोलियाँ विशेषकर ब्रज, अवधी तथा खड़ी बोली का विकास हुआ। इसी युग में हमें खड़ी बोली गद्य के विकास का सूत्र भी मिलता है। 'प्रणामी साहित्य' का इस दृष्टि से महती योगदान है।

आधुनिक काल का समय 19वीं सदी से शुरू होता है तथा इसी काल में हिंदी साहित्य में ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली का प्रयोग दिखता है। गद्य के सभी रूपों का विकास भी इस काल में होता है। 1992 ई. के आस-पास हिंदी कविता भी गद्य की तरह खड़ी बोली में लिखी जाने लगी थी।

हिंदी खड़ी बोली के विकास में **लल्लूलाल**, **सदासुख लाल**, **सदल मिश्र** तथा **इंशा अल्ला खाँ** का महत्त्वपूर्ण योगदान है और फिर आगे चलकर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी की अभूतपूर्व सेवाओं से खड़ी बोली हिंदी ने एक व्यवस्थित तथा परिष्कृत रूप प्राप्त किया।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य उस समय के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि परिस्थितियों से प्रभावित तो हुआ, पर वह विकास की राह पर बिना रुके बढ़ता ही रहा। देश को आजादी तो 1947 ई. में मिली पर हिंदी को राजभाषा का दर्जा 1965 ई. में ही मिल पाया।

अध्याय का विहंगावलोकन

भाषा का अर्थ और परिभाषा

सामान्यतः भाषा को वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम कहा जा सकता है। भाषा आभ्यंतर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय

www.neerajbooks.com

माध्यम है। यही नहीं वह हमारे आभ्यंतर के निर्माण, विकास, हमारी अस्मिता, सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परम्परा से विच्छिन्न है।

भाषा को प्राचीन काल से ही परिभाषित करने की कोशिश की जाती रही है। इसकी कुछ मुख्य परिभाषाएं निम्नलिखित हैं–

'भाषा' शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है–बोलना या कहना अर्थात् भाषा वह है, जिसे बोला जाए।

प्लेटो ने 'सोफिस्ट' में विचार और भाषा के संबंध में लिखते हुए कहा है कि विचार और भाषा में थोड़ा ही अंतर है। विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है और वही शब्द जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होते हैं, तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।

डॉक्टर बाबूराम सक्सेना का मानना है, ''जिन ध्वनि चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, उनकी समष्टि को भाषा कहते हैं।''

स्वीट के अनुसार ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।

वेंद्रीय कहते हैं कि भाषा एक तरह का चिह्न है। चिह्न से आशय उन प्रतीकों से है, जिनके द्वारा मानव अपने विचार दूसरों के समक्ष प्रकट करता है। ये प्रतीक कई प्रकार के होते हैं, जैसे–नेत्रग्राह्य, श्रोत्र ग्राह्य और स्पर्श ग्राह्य। वस्तुतः भाषा की दृष्टि से श्रोत्रग्राह्य प्रतीक ही सर्वश्रेष्ठ हैं।

ब्लॉक तथा **ट्रेगर** के अनुसार, "भाषा यादृच्छिक भाष् प्रतीकों का तंत्र है, जिसके द्वारा एक सामाजिक समूह सहयोग करता है।"

स्त्रुत्वा कहते हैं कि भाषा यादृच्छिक भाष् प्रतीकों का तंत्र है, जिसके द्वारा एक सामाजिक समूह के सदस्य सहयोग एवं संपर्क करते हैं।

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के शब्दों में, "भाषा वो यादृच्छिक भाष् प्रतीकों का तंत्र है, जिसके द्वारा मानव प्राणी एक सामाजिक समूह के सदस्य और सांस्कृतिक साझीदार के रूप में एक सामाजिक समूह के सदस्य से संपर्क एवं संप्रेषण करते हैं।"

भाषा यादृच्छिक वाचिक ध्वनि-संकेतों की वह पद्धति है, जिसके द्वारा मानव परम्परा से विचारों का आदान-प्रदान करता है। स्पष्ट ही इस कथन में भाषा के लिए चार बातों पर ध्यान दिया गया है–

(i) भाषा एक पद्धति है यानी एक सुसम्बद्ध और सुव्यवस्थित योजना या संघटन है, जिसमें कर्ता, कर्म, क्रिया आदि व्यवस्थित रूप में आ सकते हैं।

(ii) भाषा संकेतात्मक है अर्थात् इसमें जो ध्वनियाँ उच्चारित होती हैं, उनका किसी वस्तु या कार्य से संबंध होता है। ये ध्वनियाँ संकेतात्मक या प्रतीकात्मक होती हैं।

(iii) भाषा वाचिक ध्वनि-संकेत हैं अर्थात् मनुष्य अपनी वागिन्द्रिय की सहायता से संकेतों का उच्चारण करता है, वे ही भाषा के अंतर्गत आते हैं।

(iv) भाषा यादृच्छिक संकेत है।

यादृच्छिक से तात्पर्य है–ऐच्छिक अर्थात् किसी भी विशेष ध्वनि का किसी विशेष अर्थ से मौलिक अथवा दार्शनिक सम्बन्ध नहीं होता। प्रत्येक भाषा में किसी विशेष ध्वनि को किसी विशेष अर्थ का वाचक 'मान लिया जाता' है। फिर वह उसी अर्थ के लिए रूढ़ हो जाता है। कहने का अर्थ यह है कि वह परम्परानुसार उसी अर्थ का वाचक हो जाता है। अन्य भाषाओं में उस अर्थ का वाचक कोई दूसरा शब्द होगा।

भाषा का स्वरूप और प्रकृति

भाषा को 'यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों' की व्यवस्था कहा जाता है। भाषा समाज में आपस में विचार-विनिमय के लिए प्रयुक्त होती है। भाषा प्रतीकात्मक होती है और इसका कार्य संप्रेषण करना होता है। इसके प्रतीक संकल्पना के रूप में साधारणीकृत होते हैं और संप्रेषण के रूप में भावों एवं विचारों का बोधन कराते हैं। स्विस विद्वान **सस्यूर** के अनुसार प्रतीक का संबंध संकेतित वस्तु और संकेतार्थ से होता है। संकेतित वस्तु के अर्थ उन भौतिक और यथार्थ वस्तुओं के साथ जुड़े होते हैं, जो गैर-भाषायी तथा वास्तविक जगत् की होती हैं। उस यथार्थ वस्तु का मानव मस्तिष्क में जो चित्र बनता है, वह संकल्पना मनोवैज्ञानिक, बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, जातीय और परंपरागत परिवेशों से संबद्ध होती है।

ध्वनियों का सार्थक और स्वतंत्र समूह प्रतीक हैं–(1) प्रतीक के रूप में गृहीत शब्द या वाक्य की संकल्पना निर्दिष्ट वस्तुओं या भावों को अपने भीतर समेट लेने की सामान्यीकृत मानसिक यथार्थता होती है। इसे 'भाषिक प्रतीक' कहा जाता है। उदाहरण के लिए, हमारे सामने यथार्थ वस्तु 'पेड़' है, जिसके रूपाकार की संकल्पना मानव-मस्तिष्क में बैठ गई है और ध्वनियों के संयोजन से यह भाषिक प्रतीक बन गया है।

संकेतित वस्तु और प्रतीक का संबंध मानसिक होता है, क्योंकि यह वक्ता और श्रोता के मस्तिष्क में संकल्पना के साथ रहता है, लेकिन प्रतीक और यथार्थ वस्तु के बीच संकल्पनात्मक संबंध नैसर्गिक या प्राकृतिक न होकर यादृच्छिक होता है, इसलिए विभिन्न भाषाओं में विभिन्न शब्दों का प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए, हिन्दी का शब्द 'घोड़ा', संस्कृत में शब्द 'अश्व', अंग्रेजी में 'हॉर्स', चीनी में 'मा', रूसी में 'कोल्य' और फ्रेंच में 'शेवल' कहलाता है। यथार्थ वस्तु, संकल्पना और प्रतीक का संबंध अनिवार्य रूप से स्थानवाची, कालवाची, सामाजिक-सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक कई रूपों में दिखाई देता है। परिवेश के अनुरूप इनके अर्थ भी बदल जाते हैं। कभी-कभी संकल्पना भी प्रतीक रूप में अनुपस्थित वस्तु का रूप धारण कर लेती है, जैसे–स्वर्ग, नरक, अमृत आदि प्रतीक परंपरागत संस्कार-सापेक्ष या समाज-संदर्भित होते हैं और इनकी अपनी मानसिक संकल्पना निर्धारित हो जाती है।

संकेतित वस्तु, संकेतार्थ और प्रतीक के संबंधों के आधार पर कहा जा सकता है कि भाषिक प्रतीक कथ्य और अभिव्यक्ति की समन्वित इकाई है। इसमें इन दोनों पक्षों का होना अनिवार्य है। प्रतीक

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

के लिए कथ्य और अभिव्यक्ति का अटूट संबंध है। इसी संबंध के कारण प्रतीक अपने-आप में सिद्ध हैं, लेकिन व्यक्ति-विशेष या समाज-विशेष के लिए असिद्ध हो सकते हैं। कथ्य के स्तर पर अर्थ के कई आयाम होते हैं–बोधात्मक, संरचनात्मक, सामाजिक और सांस्थानिक। एक ही प्रतीक में कम-से-कम एक या दो अर्थ मिल जाते हैं। उदाहरणत: 'जलज' और 'नीरज' दोनों का बोधात्मक अर्थ 'कमल' है, लेकिन उससे जो अन्य अर्थ निकलता है, वह विषय-वासनाओं से अप्रभावित रहने का संकेत करता है। अनेक बार दो या तीन अभिव्यक्तियों में एक ही अर्थ या कथ्य पाया जाता है। वस्तुत: कथ्य और अभिव्यक्ति में जो अटूट संबंध हैं, उसमें लचीलापन भी है। इसी कारण हर भाषा में अनेकार्थी अथवा संदिग्धार्थी और पर्यायवाची शब्द या वाक्य मिल जाते हैं।

वाक्य के धरातल पर तीन वाक्य देखें–

(क) रिया ने पतले लड़के को भोजन दिया।

(ख) रिया ने जिस लड़के को भोजन दिया, वह पतला है।

(ग) रिया ने उस लड़के को भोजन दिया, जो पतला है।

इन तीनों अभिव्यक्तियों ने एक ही अर्थ का प्रतिपादन किया है, किंतु वाक्य संरचना भिन्न है।

इसी प्रकार, शब्द के धरातल पर 'उसे सोना महंगा पड़ा' और 'करण ने उस दिन मन भर मिठाई खाई' वाक्यों में 'सोना' तथा 'मन' अभिव्यक्ति के स्तर पर एक हैं, किन्तु कथ्य के स्तर पर दो हैं। 'सोना' शब्द 'स्वर्ण' और 'निद्रा' दो अर्थ देता है और 'मन' 'वजन' (40 किलो) और 'जी' (दिल) का अर्थ देता है।

वाक्य के धरातल पर 'मैंने पाजामा पहनते हुए मोहन को देखा' के अभिव्यक्ति के स्तर पर दो अर्थ हो सकते हैं। उदाहरण के लिए,

(क) जब मैं पाजामा पहन रहा था, उस समय मैंने मोहन को देखा।

(ख) मैंने जब मोहन को देखा, मोहन पाजामा पहन रहा था।

प्रतीकों की व्यवस्था–हर भाषा प्रतीकों की व्यवस्था होती है। उदाहरण के लिए, हिन्दी में 'करण श्रवण को पीटता है' वाक्य में 'करण' कर्ता के रूप में पहले आता है, बाद में 'श्रवण' कर्म के रूप में और फिर क्रिया 'पीटता है' आती है। इस प्रकार हिन्दी की मूल आंतरिक व्यवस्था 'कर्ता-कर्म-क्रिया' है। अंग्रेजी की व्यवस्था है कर्ता-क्रिया-कर्म (Karan beats Shravan)। इस प्रकार प्रतीकों की आंतरिक व्यवस्था भाषा है।

समाज और प्रतीक का संबंध–भाषा कई प्रयोजनों की सिद्धि करती है। अत: समाज में प्रतीक हेतु का काम करते हैं। समाज का अर्थ वह भाषा-भाषी समुदाय है, जिसके अपने सामाजिक स्तर होते हैं, सांस्कृतिक रीति-रिवाज और परंपराएं होती हैं। यह समाज अपनी भाषा में कार्य-व्यापार करता है। इसमें समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, परंपरागत, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, प्रयोजनपरक आदि विभिन्न परिवेश या संदर्भ जुड़े होते हैं। भाषा-प्रतीकों से हमारे सामाजिक और पारिवारिक संबंधों की जानकारी के साथ-साथ वक्ता-श्रोता के अंतर्वैयक्तिक संबंधों की जानकारी भी भी मिलती है। उदाहरण के लिए, सांस्कृतिक परिवेश में 'पुष्प', 'कलश', 'अक्षत' आदि शब्दों का जो प्रयोग होता है, उनके स्थान पर फूल, लोटा, चावल आदि शब्दों या पर्यायों का प्रयोग निषेध होता है। इस प्रकार, भाषा का मुख्य प्रकार्य संप्रेषण है, जो अपनी संरचनात्मक व्यवस्था में सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक रीति-रिवाज, परंपराओं आदि को अभिव्यक्त करती है।

भाषा के विविध रूप

भौगोलिक या क्षेत्रीयता के आधार पर

(क) व्यक्ति बोली (Ideolect)–व्यक्ति की भाषा पर सामाजिक, क्षेत्रीय और पर्यावरणीय संदर्भों का प्रत्यक्ष एवं दूरगामी प्रभाव पड़ता है। हर व्यक्ति की अपनी व्यक्ति बोली होती है। **हॉकेट** ने व्यक्ति बोली को परिभाषित करते हुए कहा है, ''किसी निश्चित समय पर व्यक्ति-विशेष का समूचा वाक्-व्यवहार उसकी व्यक्ति बोली है।'' शाब्दिक और व्याकरणिक व्यक्तिपरकता के कारण ही व्यक्ति बोली संभव होती है।

(ख) स्थानीय बोली–व्यक्ति-बोलियों से एक स्थानीय बोली बनती है। स्थानीय बोली बनने के लिए व्यक्ति-बोलियों में ध्वनि, रूप, वाक्य एवं अर्थ के स्तर पर पारस्परिक बोधगम्यता होती है।

(ग) उप-बोली (Sub-Dialect)–अनेक स्थानीय बोलियों से एक उप-बोली बनती है। उदाहरण के लिए, छपरिया, खखार, शाहवारी, गोरखपुरी, नागपुरिया आदि भोजपुरी की उपबोलियां हैं।

(घ) बोली (Dialect)–उप-बोलियों से मिलकर बोली बनती है। इसे विभाषा भी कहा जाता है। कुछ विद्वानों ने बोलियों के उपवर्ग को उपभाषा कहा है; जैसे–भोजपुरी, मैथिली और मगही बोलियां बिहारी उपभाषा वर्ग में समाहित हैं।

(ङ) उपभाषा (Sub-language)–कुछ विद्वान् कुछ बोलियों के उपसर्ग को उपभाषा कहते हैं; जैसे–पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग में खड़ी बोली, हरियाणवी, ब्रजभाषा, कन्नौजी और बुंदेली बोलियां शामिल हैं, लेकिन यह वर्गीकरण भ्रामक और गलत है, क्योंकि इसमें व्याकरणिक समानता और परस्पर बोधगम्यता तो समान हो सकती है, किन्तु जातीय अस्मिता के कारण इनमें भिन्नता है।

(च) भाषा–एकाधिक बोलियां अथवा उपभाषाएं मिलकर एक भाषा बनाती है। एक भाषा के अंतर्गत एकाधिक बोलियां हो सकती हैं। जैसे हिन्दी भाषा के अंतर्गत अठारह बोलियां अथवा पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, बिहारी, पहाड़ी और राजस्थानी पांच उपभाषाएं हैं। भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है। भाषा में ऐतिहासिकता, जीवंतता, स्वायत्तता और मानकता–चार गुण पाए जाते हैं। बोली और भाषा में व्याकरणिक समानता और बोधगम्यता तो समान हो सकती है, किन्तु जातीय अस्मिता तथा जातीय बोध के कारण भाषा विशाल समुदाय की प्रतीक बन जाती है।

प्रयोग के आधार पर

प्रयोग के आधार पर भाषा के विभिन्न रूप मिलते हैं, यथा–

(क) सामान्य बोलचाल की भाषा–किसी भी समाज में रोजमर्रा के रूप में प्रयुक्त होने वाली सामान्य भाषा होती है, जो प्राय:

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

संपर्क भाषा का काम करती है। इसकी पहचान भाषिक इकाइयों, शब्दावली और व्याकरणिकता के आधार पर होती है।

(ख) साहित्यक भाषा–भाषा का यह रूप साहित्य-रचना, शिक्षा आदि में प्रयोग होता है। यह प्रायः परिनिष्ठित होती है, किन्तु साहित्यिक भाषा कभी-कभी सामान्य भाषा के नियमों के नियमों को तोड़ती है। विशिष्ट चयन-संयोजन से यह विशिष्ट भाषा बन जाती है। हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी, जर्मन आदि भाषाएं साहित्यिक भाषा भी हैं।

(ग) व्यावसायिक भाषा–व्यवसाय-व्यापार में प्रयुक्त होने वाली भाषा व्यावसायिक भाषा कहलाती है। यह प्रायः औपचारिक एवं अनौपचारिक और तकनीकी या अर्द्धतकनीकी होती है। लिखित और मौखिक दोनों रूपों में इसका प्रयोग व्यापार संबंधी विशिष्ट शब्दावली और संरचना के साथ होता है।

(घ) कार्यालयी भाषा–कार्यालयों, निकायों, कंपनियों, प्रशासन आदि में कार्यालयी भाषा प्रयुक्त होती है। सामान्य भाषा पर आधारित होने के बावजूद इसकी शब्दावली तथा संरचना में अंतर होता है। तकनीकी या अर्द्धतकनीकी होने के कारण यह प्रायः औपचारिक शैली में लिखी जाती है।

(ङ) राजभाषा–यह सरकार और जनता के बीच प्रयुक्त होने वाला परिनिष्ठित और मानक भाषा रूप है। यह देश में अधिक बोले जाने वाली भाषा होती है। इसमें विषयानुसार शब्दावली और संरचना का प्रयोग होता है। इसका प्रयोग प्रायः सरकारी मंत्रालयों, कार्यालयों, कंपनियों, नियमों, निकायों, संसद आदि में होता है, ताकि जनता के साथ संबंध बनाया जा सके। भारत की राजभाषा हिन्दी है।

(च) राष्ट्रभाषा–राष्ट्रभाषा का संबंध राष्ट्रीय चेतना से होता है और राष्ट्रीय चेतना सांस्कृतिक चेतना से जुड़ी होती है। इसमें अपने देश की महान परंपरा और सामाजिक-सांस्कृतिक अस्मिता जागृत होती है। राष्ट्रभाषा राजभाषा हो सकती है, लेकिन राजभाषा राष्ट्रभाषा भी हो, यह आवश्यक नहीं।

(छ) गुप्त भाषा (Cant)–किसी विशेष वर्ग या समूह या संप्रदाय में प्रयुक्त भाषा गुप्त भाषा कहलाती है, जिसे उसी वर्ग के लोग समझ सकते हैं। इसे वर्ग भाषा या चोर भाषा (roget) भी कहते हैं। इसकी सीमा भौगोलिक नहीं होती। यह भाषा अधिकांशतः सेना, डकैतों या चोरों द्वारा प्रयुक्त होती है। इसे कूट भाषा (Code language) भी कह सकते हैं।

(ज) मृत भाषा (Dead language)–भूतकाल में जीवंत भाषा के रूप में विपुल साहित्य-भंडार के साथ प्रयोग होने वाली जो भाषा राज-काज में भी प्रयुक्त होती रही हो, किन्तु वर्तमान काल में जिसका व्यवहार सामाजिक दृष्टि से न हो रहा हो अथवा उसका प्रयोग बहुत ही सीमित हो गया हो, उसे मृत भाषा कहते हैं। वर्तमान में इस भाषा का अस्तित्व परंपरा, धर्म, संस्कृति को सुरक्षित रखने की दृष्टि से होता है। यह एक प्रकार से पुस्तकालय भाषा बनकर रह जाती है; जैसे–ग्रीक, लेटिन, संस्कृत आदि।

निर्माण के आधार पर

(क) सहज भाषा–सामान्य बोलचाल की प्राकृतिक और सहज रूप से निर्मित भाषाओं को सहज भाषा कहा जाता है; जैसे–हिन्दी, अंग्रेजी, जर्मन।

(ख) कृत्रिम भाषा–विभिन्न भाषाओं के बीच सार्वभौमिक रूपों को लेकर अंतर्राष्ट्रीय संप्रेषण की दृष्टि से कृत्रिम भाषा बनाई जाती है; जैसे–एस्पेरैंतो, इंडो। इसका उद्देश्य विभिन्न भाषा-भाषी लोगों को परस्पर लाकर भाषिक आदान-प्रदान की सुविधा देना था। कृत्रिम भाषा के दो उपभेद किए जाते हैं–

(i) **सामान्य कृत्रिम भाषा**–सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त करने के लिए बनाई गई भाषा; जैसे–एस्पेरैंतो।

(ii) **गुप्त कृत्रिम भाषा**–किसी विशिष्ट प्रयोजन के लिए बनाई गई भाषा; जैसे–सेना, दलालों, डाकुओं आदि की भाषा।

मानकता के आधार पर

(क) मानक या परिनिष्ठित भाषा–व्याकरणसम्मत तथा प्रयोगसम्मत भाषा ही मानक भाषा का दर्जा पाती है। मानक ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि में व्याकरणसम्मत होने के साथ-साथ एकरूपता और लोक स्वीकृति होना भी आवश्यक है।

(ख) मानकेतर भाषा–जो भाषा प्रयोगसम्मत एवं लोक स्वीकृत हो, किन्तु व्याकरणसम्मत न हो।

(ग) अमानक भाषा–मानक भाषा जो भाषा व्याकरणसम्मत एकरूपी न तथा लोकस्वीकृत न हो।

अपभाषा (Slang)–व्यवहार में यह भाषा अनौपचारिकता का अतिशयवादी रूप है, जो प्रायः अशिक्षित या अर्द्धशिक्षित वर्ग के लोग बालते हैं। इसमें अशिष्ट एवं अग्राह्य रूपों तथा स्थानीय बोलचाल के ठेठ और अश्लील शब्दों का प्रयोग भी खुलकर होता है।

प्रकार्य के आधार पर

(क) संपूरक भाषा–निजी ज्ञान की वृद्धि के लिए द्वितीय भाषा प्रयोग करना सीखना। यह पुस्तकालय भाषा होती है, जिसका सक्रिय प्रयोग नहीं होता।

(ख) परिपूरक भाषा–वह भाषा, जो सामाजिक प्रयोजनों की पूर्ति के लिए समुदाय में प्रचलित दूसरी भाषा जानने हेतु आवश्यक हो। यह मातृभाषा के साथ-साथ सामाजिक स्तर पर परिपूरक के रूप में प्रयुक्त भाषा होती है; जैसे–भारत में हिन्दी या अपनी मातृभाषा के साथ अंग्रेजी।

(ग) सहायक भाषा–व्यक्ति अपने समुदाय में दूसरी भाषा का ज्ञान अपने ज्ञान की सहायक भाषा के रूप में करता है; जैसे–हिन्दी और संस्कृत। हिन्दी का प्रयोग करते हुए व्यक्ति को कभी संस्कृत की भी सहायता लेनी पड़ती है।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com